नव दुनिया

14/7/2013

दावों की पोल | झाबुआ का मामला : स्वर्णिम मध्यप्रदेश की मैदानी हकीकत

बड़ा भाई हांके, छोटा भाई बना बैल

सचिन त्रिवेदी >> झाबुआ

एक ओर स्वर्णिम मध्यप्रदेश का ख्वाब संजोया जा रहा है परंतु मैदानी हकीकत इससे इत्तेफाक नहीं रखती। झाबुआ में किसान बैल की जगह खुद को जोतकर धरती से उपज लेने पर मजबूर है। प्रशासन कायदों का हवाला देकर लाचारी दिखा रहा है तो किसान परिवार के माथे से टपकता पसीना विकास के दावों की पोल खोल रहा है।

झाबुआ से लगे बिलीडोज इलाके में किसान अनिल भूरिया का परिवार पेट भरने के लिए पशुओं की तरह जीवन जीने पर पर विवश है। चार भाइयों वाले इस परिवार के हिस्से में करीब 5 एकड़ जमीन है और वे मिलकर खेती कर रहे

हैं। संसाधनों को मोहताज इस परिवार के पास खेत जोतने के लिए बैल जुटाने इतनी राशि भी जमा नहीं है। ऐसे में खरीफ की उपज मक्का और सोयाबीन को लहलहाने के लिए दो भाइयों को बैल बनना पड़ रहा है। कभी छोटा भाई हांकता है तो बड़ा बैल बनकर खेत जोतता है। वहीं छोटे के थक जाने पर बड़ा भाई हल को अपने कांधे पर लेकर बैल की तरह खुद को जोते रखता है। इस परिवार का संघर्ष प्रदेश को स्वर्णिम बनाने के सपनों के बीच एक जुदा तस्वीर दिखा रहा है।

स्कूल जाने की उम्र

किसान परिवार में सबसे छोटा भाई राजू भूरिया अभी 15 बरस का ही है और उसका सपना भी स्कूल जाने का था। परंतु परिवार की गाड़ी चलाने के लिए वह खेत में खुद को बैल की तरह जोतकर हाड़तोड़ काम कर रहा है। छोटे भाई के सपनों को अपनी आंखों के सामने बिखरते देखने के अलावा बड़े भाइयों के पास कोई दूसरा विकल्प भी नहीं है। परिवार के नौ सदस्यों का पेट पालने के लिए बदल-बदल कर बैल बनना ही मजबूरी है।

> बिलीडोज में क्लस्टर गांव की तरह बीपीएल परिवार न होने से यहां के किसान योजना के दायरे में नहीं आते। जिले के 200 गांव में इन परिवारों को सुविधाएं दे रहे हैं। किसान भूरिया के परिवार के लिए फिलहाल सूची अनुसार राशि का प्रावधान नहीं बनता है।
>
> **-महेश पाटीदार**, परियोजना प्रशासक आईटीडीपी झाबुआ